Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष एवं सामाजिक यथार्थ

[1]दीप्तिबाला मिश्रा, शोधार्थी, [2]डॉ. ममता रानी, शोध निर्देशक

हिंदी विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

शोध सार: स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नई कहानी आंदोलन ने जीवन के यथार्थ को नये सिरे से देखने और प्रस्तुत करने की दृष्टि विकसित की। मन्नू भंडारी इस आंदोलन की उन प्रमुख कथाकारों में हैं जिन्होंने महानगरीय और कस्बाई मध्यवर्ग के जीवन को, उसके आर्थिक संघर्ष, भावनात्मक एकाकीपन और बदलते संबंधों को अत्यंत सहज एवं प्रामाणिक भाषा में चित्रित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में 'यही सच है', 'अकेली', 'त्रिशंकु', 'नई नौकरी', 'सयानी बुआ', 'एक प्लेट सैलाब' जैसी कहानियों के आधार पर मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष और तत्कालीन सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि मन्नू भंडारी की कहानियाँ साधारण मनुष्य के असाधारण आंतरिक संघर्ष को किस प्रकार कलात्मक ऊँचाई प्रदान करती हैं। यह शोध पत्र विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक पद्धति पर आधारित है।

बीज शब्द: मध्यवर्गीय जीवन, सामाजिक यथार्थ, नई कहानी आंदोलन, महानगरीय एकाकीपन, आर्थिक संघर्ष, मानवीय संबंध, स्त्री जीवन, हिंदी कहानी।

प्रस्तावना

किसी भी समाज का सच्चा दर्पण उसका साहित्य होता है, और कहानी विधा इस दर्पण का सबसे संवेदनशील रूप है क्योंकि वह जीवन के छोटे छोटे क्षणों में भी बड़े सत्य को पकड़ लेती है। स्वतंत्रता के बाद का भारतीय समाज अनेक परिवर्तनों से गुज़र रहा था — गाँवों से शहरों की ओर पलायन, संयुक्त परिवार का विघटन, आर्थिक असुरक्षा और महानगरीय जीवन का बढ़ता हुआ अकेलापन। इन सभी परिवर्तनों का सर्वाधिक प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा, जो न तो पूरी तरह सुरक्षित था और न ही पूरी तरह वंचित।

मन्नू भंडारी ने इसी मध्यवर्गीय जीवन को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया। उन्होंने न तो बड़े बड़े आदर्शों की बात की और न ही असाधारण नायकों की कथा कही, बल्कि साधारण मनुष्यों के साधारण जीवन के भीतर छिपे संघर्ष, टूटन और जिजीविषा को उजागर किया। उनकी कहानियों में जो यथार्थ है, वह बाहरी घटनाओं का नहीं बल्कि भीतरी अनुभूतियों का यथार्थ है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी मध्यवर्गीय जीवन-संघर्ष और सामाजिक यथार्थ के स्वरूप का विश्लेषण करता है।

शोध की प्रासंगिकता एवं उद्देश्य

मध्यवर्ग किसी भी आधुनिक समाज की रीढ़ माना जाता है, और इसी वर्ग के माध्यम से समाज के मूल्य, आकांक्षाएँ और अंतर्विरोध सबसे स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। मन्नू भंडारी की कहानियों का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे इस वर्ग के जीवन को भीतर से जानती और अनुभव करती थीं। उनकी कहानियों का पुनर्पाठ हमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मध्यवर्ग की मानसिकता, उसके संघर्ष और उसके संक्रमण को समझने में सहायता करता है।

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं — पहला, मन्नू भंडारी की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष का विश्लेषण करना। दूसरा, उनकी कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ के विविध आयामों को पहचानना। तीसरा, उनकी कथा दृष्टि, भाषा और शिल्प की उन विशेषताओं को रेखांकित करना जो उनके यथार्थ बोध को प्रामाणिकता प्रदान करती हैं। चौथा, यह स्पष्ट करना कि उनकी कहानियाँ अपने समय का दस्तावेज़ होते हुए भी मानव मन के शाश्वत प्रश्नों को किस प्रकार स्पर्श करती हैं।

मध्यवर्ग की संकल्पना और हिंदी कहानी

मध्यवर्ग एक ऐसा सामाजिक वर्ग है जो न तो पूर्णतः संपन्न है और न ही पूर्णतः वंचित। इसी द्वैध स्थिति के कारण यह वर्ग निरंतर एक मानसिक तनाव में जीता है — एक ओर ऊपर उठने की आकांक्षा और दूसरी ओर नीचे गिर जाने का भय। स्वतंत्रता के बाद नगरीकरण और शिक्षा के विस्तार के साथ यह वर्ग तेज़ी से बढ़ा, और इसके साथ ही इसके आंतरिक अंतर्विरोध भी गहरे होते गए।

हिंदी कहानी ने इस मध्यवर्गीय जीवन को अपना प्रमुख विषय बनाया, क्योंकि साहित्यकार स्वयं प्रायः इसी वर्ग से आते थे और इसके सुख दुख को निकट से जानते थे। मन्नू भंडारी ने इस वर्ग की महिलाओं, बुज़ुर्गों, युवाओं और कर्मचारियों के जीवन को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया। उनकी कहानियों में आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता, संबंधों की जटिलता और भावनात्मक एकाकीपन — ये सभी मध्यवर्गीय जीवन के स्थायी लक्षण बार बार उभरकर सामने आते हैं।

नई कहानी आंदोलन और मन्नू भंडारी

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में नई कहानी आंदोलन ने उस आदर्शवादी और भावुक प्रवृत्ति से अलग हटकर जीवन के यथार्थ को सीधे प्रस्तुत करने का प्रयास किया जो प्रेमचंदोत्तर युग में प्रचलित थी। इस आंदोलन के कथाकारों ने महानगरीय जीवन, टूटते संबंध, व्यक्ति का एकाकीपन और मूल्यों के संकट को कथा का विषय बनाया। मन्नू भंडारी इस आंदोलन की महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं।

मन्नू भंडारी की विशिष्टता यह है कि उन्होंने यथार्थ को नीरस अथवा कटु नहीं बनने दिया, बल्कि उसमें मानवीय संवेदना और भावनात्मक सच्चाई का स्पर्श बनाए रखा। उनकी भाषा बोलचाल के निकट है, उनके पात्र हमारे आसपास के लोग जैसे लगते हैं, और उनकी कथा वस्तु रोज़मर्रा के जीवन से उठाई गई होती है। यही सहजता उनकी कहानियों को पाठक के अनुभव के निकट ले आती है और उन्हें नई कहानी आंदोलन के भीतर एक विशिष्ट स्वर प्रदान करती है।

'यही सच है' : प्रेम, स्मृति और वर्तमान का द्वंद्व

'यही सच है' मन्नू भंडारी की सर्वाधिक प्रसिद्ध कहानियों में से एक है जो एक युवती दीपा के भावनात्मक द्वंद्व को प्रस्तुत करती है। दीपा अपने अतीत के प्रेम और वर्तमान के संबंध के बीच झूलती रहती है, और इसी ऊहापोह में वह यह समझने का प्रयास करती है कि उसके लिए वास्तविक सत्य क्या है। यह कहानी आधुनिक मध्यवर्गीय युवती के मन की उस उलझन को उजागर करती है जहाँ भावनाएँ स्थिर नहीं रहतीं बल्कि परिस्थिति और सान्निध्य के साथ बदलती रहती हैं।

इस कहानी का सामाजिक यथार्थ इस बात में निहित है कि यह शिक्षित मध्यवर्गीय युवती के स्वतंत्र भावनात्मक जीवन को बिना किसी नैतिक निर्णय के प्रस्तुत करती है। मन्नू भंडारी यहाँ यह दिखाती हैं कि प्रेम और संबंध मनुष्य के मन की जटिल और परिवर्तनशील अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें किसी एक स्थायी सत्य में बाँधना कठिन है। यह कहानी अपनी मनोवैज्ञानिक गहराई और भावनात्मक प्रामाणिकता के कारण हिंदी कहानी का एक मील का पत्थर मानी जाती है।

'अकेली' : वृद्धावस्था, उपेक्षा और एकाकीपन का यथार्थ

'अकेली' कहानी की केंद्रीय पात्र सोमा बुआ एक अकेली, उपेक्षित और स्नेह की प्यासी वृद्धा है। यह कहानी मध्यवर्गीय समाज में बुज़ुर्गों, विशेषकर अकेली स्त्रियों, की उस करुण स्थिति को उजागर करती है जहाँ उन्हें न तो परिवार में स्थान मिलता है और न ही समाज में सम्मान। सोमा बुआ अपने रिश्तेदारों के सुख दुख में बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहती है, किंतु बार बार उपेक्षित और अपमानित होती है।

इस कहानी का सामाजिक यथार्थ अत्यंत मार्मिक है। यह उस मध्यवर्गीय परिवार व्यवस्था की ओर संकेत करती है जो धीरे धीरे संवेदनहीन और स्वार्थपरक होती जा रही है। सोमा बुआ का एकाकीपन केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि बदलते सामाजिक ढाँचे में उपेक्षित होते वृद्ध जनों के एक

पूरे वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। मन्नू भंडारी ने बिना किसी अतिरंजना के, अत्यंत संयत भाषा में इस पीड़ा को इतनी गहराई से उकेरा है कि पाठक का हृदय द्रवित हुए बिना नहीं रहता।

'त्रिशंकु' : पीढ़ियों का अंतराल और मूल्यों का संकट

'त्रिशंकु' कहानी दो पीढ़ियों के बीच के मूल्यगत अंतराल को प्रस्तुत करती है। इस कहानी में एक ओर पुरानी पीढ़ी की रूढ़ मान्यताएँ हैं और दूसरी ओर नई पीढ़ी की बदलती आकांक्षाएँ। बीच में फँसी हुई पात्र त्रिशंकु की तरह न इधर की रहती है और न उधर की — यही उसकी स्थिति का त्रासद यथार्थ है।

यह कहानी मध्यवर्गीय परिवार में हो रहे सांस्कृतिक संक्रमण को बड़ी सूक्ष्मता से रेखांकित करती है। आधुनिक शिक्षा और पारंपरिक संस्कारों के बीच का टकराव, माँ और बेटी के दृष्टिकोणों का अंतर, और बदलते समय में मूल्यों की पुनर्व्याख्या — ये सब इस कहानी के केंद्रीय प्रश्न हैं। मन्नू भंडारी इस कहानी के माध्यम से यह दिखाती हैं कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में मध्यवर्गीय व्यक्ति प्रायः दुविधा और असमंजस की स्थिति में रहता है, जहाँ न तो वह अतीत को पूरी तरह छोड़ पाता है और न ही वर्तमान को सहजता से अपना पाता है।

'नई नौकरी' और 'सयानी बुआ' : आर्थिक संघर्ष और सामाजिक संबंध

'नई नौकरी' जैसी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन के आर्थिक संघर्ष और रोज़गार की अनिश्चितता को उजागर करती हैं। नौकरी पाने की चिंता, आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने का दबाव — ये मध्यवर्गीय जीवन के स्थायी संकट हैं जिन्हें मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में बारीकी से पकड़ा है। आर्थिक दबाव किस प्रकार पारिवारिक संबंधों और व्यक्ति की मानसिक स्थिति को प्रभावित करता है, यह उनकी कहानियों का एक आवर्ती विषय है।

'सयानी बुआ' जैसी कहानियाँ पारिवारिक संबंधों की उन सूक्ष्म जटिलताओं को उजागर करती हैं जो प्रायः अनकही रह जाती हैं। इन कहानियों में स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखिका यह दिखाती हैं कि मध्यवर्गीय परिवार में स्त्री की भूमिका, उसकी अपेक्षाएँ और उसकी सीमाएँ किस प्रकार सामाजिक ढाँचे द्वारा निर्धारित होती हैं। इन कहानियों का यथार्थ इस बात में है कि वे संबंधों की मिठास और कटुता दोनों को एक साथ प्रस्तुत करती हैं।

मन्नू भंडारी की कथा दृष्टि और सामाजिक यथार्थ की विशेषताएँ

मन्नू भंडारी की कहानियों के विश्लेषण से उनके यथार्थ बोध की कुछ प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं। सबसे पहली विशेषता यह है कि उनका यथार्थ आंतरिक यथार्थ है — वे बाहरी घटनाओं के विवरण की अपेक्षा पात्रों की भीतरी अनुभूतियों, उनके मानसिक द्वंद्व और उनकी भावनात्मक उथल पुथल पर अधिक ध्यान देती हैं।

दूसरी विशेषता उनकी भाषा की सहजता है। वे बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती हैं, जिससे उनकी कहानियाँ जीवन के अत्यंत निकट प्रतीत होती हैं। तीसरी विशेषता यह है कि वे साधारण से साधारण घटना में भी मानवीय संवेदना का गहन स्तर खोज निकालती हैं। चौथी विशेषता उनकी संतुलित और संयमित दृष्टि है — वे न तो भावुकता में बहती हैं और न ही कठोर निर्णय देती हैं, बल्कि जीवन को उसकी समग्रता में प्रस्तुत करती हैं।

इन विशेषताओं के कारण मन्नू भंडारी का कथा साहित्य मध्यवर्गीय जीवन का एक प्रामाणिक और जीवंत दस्तावेज़ बन जाता है। उनकी कहानियाँ अपने समय के समाज को समझने की एक महत्वपूर्ण कुंजी प्रदान करती हैं और साथ ही मानव मन के शाश्वत संघर्षों को भी उजागर करती हैं।

महानगरीय जीवन और एकाकीपन का यथार्थ

मन्नू भंडारी की अनेक कहानियाँ महानगरीय जीवन के उस अकेलेपन को उजागर करती हैं जो भीड़ के बीच भी मनुष्य को घेरे रहता है। नगर में अवसर तो हैं, किंतु संबंधों की गर्माहट क्षीण होती जाती है। संयुक्त परिवार के विघटन और एकल परिवार के विस्तार के साथ व्यक्ति अपने ही परिवार में अजनबी होता जाता है। यह आधुनिक नगरीय जीवन का एक गहरा संकट है जिसे लेखिका बार बार रेखांकित करती हैं।

उनकी कहानियों में यह एकाकीपन केवल भौतिक अकेलापन नहीं, बल्कि भावनात्मक रिक्तता है। पात्र अपने आसपास के लोगों से जुड़ने का प्रयास करते हैं, किंतु आधुनिक जीवन की भागदौड़ और स्वार्थपरता उन्हें एक दूसरे से दूर कर देती है। मन्नू भंडारी इस यथार्थ को बिना किसी अतिरंजना के, अत्यंत संयत और मार्मिक भाषा में प्रस्तुत करती हैं, जिससे पाठक इस पीड़ा को अपने अनुभव के निकट पाता है।

स्त्री जीवन और मध्यवर्गीय परिवार

मन्नू भंडारी की कहानियों में मध्यवर्गीय परिवार के भीतर स्त्री की स्थिति एक आवर्ती विषय है। चाहे वह 'अकेली' की सोमा बुआ हो या अन्य कहानियों की गृहिणियाँ और युवतियाँ, स्त्री प्रायः परिवार के केंद्र में रहकर भी उपेक्षित और अकेली अनुभव करती है। लेखिका यह दिखाती हैं कि मध्यवर्गीय परिवार में स्त्री से अनेक अपेक्षाएँ की जाती हैं, किंतु उसकी अपनी आकांक्षाओं और भावनाओं की ओर प्रायः कोई ध्यान नहीं देता।

इस प्रकार मन्नू भंडारी की कहानियों में स्त्री जीवन का चित्रण मध्यवर्गीय सामाजिक यथार्थ का अभिन्न अंग बन जाता है। उनकी स्त्री पात्र अपने सीमित दायरे में रहकर भी अपने अस्तित्व और सम्मान की खोज करती हैं। यह सूक्ष्म चित्रण उनकी कहानियों को सामाजिक यथार्थ के साथ साथ मानवीय संवेदना की गहराई भी प्रदान करता है।

भाषा, शिल्प एवं कथा तकनीक

मन्नू भंडारी की कथा तकनीक उनकी रचनाओं की प्रभावशीलता का एक प्रमुख कारण है। वे बोलचाल की सहज भाषा का प्रयोग करती हैं, जिससे उनकी कहानियाँ जीवन के अत्यंत निकट प्रतीत होती हैं। उनके संवाद स्वाभाविक हैं और उनके वर्णन में कहीं भी कृत्रिमता का आभास नहीं होता। यह भाषागत सहजता उनकी कहानियों को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाती है।

शिल्प के स्तर पर वे आंतरिक एकालाप, स्मृति प्रवाह और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का कुशल प्रयोग करती हैं। वे घटनाओं के बाहरी विवरण की अपेक्षा पात्रों की भीतरी अनुभूतियों पर अधिक ध्यान देती हैं। उनकी कहानियों का अंत प्रायः खुला हुआ अथवा संकेतात्मक होता है, जो पाठक को सोचने और अनुभव करने के लिए छोड़ देता है। यह तकनीकी कौशल उनकी कहानियों को नई कहानी आंदोलन की श्रेष्ठ उपलब्धियों में स्थान दिलाता है।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

मन्नू भंडारी की कहानियों में उठाए गए प्रश्न आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। बुज़ुर्गों का अकेलापन, नगरीय जीवन की भागदौड़, संबंधों में बढ़ती दूरी, आर्थिक असुरक्षा और स्त्री की उपेक्षा — ये सब आज के समाज की भी ज्वलंत समस्याएँ हैं। आज जब परिवार और भी अधिक एकल होते जा रहे हैं और मनुष्य तकनीक के बीच और अधिक अकेला होता जा रहा है, तब उनकी कहानियाँ और भी मार्मिक प्रतीत होती हैं।

उनकी कहानियाँ यह स्मरण कराती हैं कि भौतिक प्रगति के बीच भी मनुष्य की भावनात्मक आवश्यकताएँ अपरिवर्तित रहती हैं। प्रेम, सम्मान, अपनापन और सुरक्षा की चाह हर युग के मनुष्य की मूल आवश्यकता है। यही कारण है कि मन्नू भंडारी की कहानियाँ अपने रचनाकाल से बहुत आगे निकलकर आज की पीढ़ी से भी सीधा संवाद करती हैं।

पारिवारिक विघटन और संबंधों का संकट

मन्नू भंडारी की कहानियों का एक प्रमुख स्वर पारिवारिक विघटन और संबंधों का संकट है। स्वतंत्रता के बाद का मध्यवर्गीय समाज संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर बढ़ रहा था, और इस संक्रमण ने संबंधों के पारंपरिक ढाँचे को हिला दिया। लेखिका ने इस बदलाव से उत्पन्न तनाव, दूरी और टूटन को अपनी कहानियों में बारीकी से चित्रित किया है।

उनकी कहानियों में संबंध बाहर से सामान्य दिखाई देते हैं, किंतु भीतर ही भीतर उनमें दरारें पड़ती जाती हैं। माता पिता और संतान के बीच, पति पत्नी के बीच, तथा परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच की बढ़ती हुई भावनात्मक दूरी उनकी कहानियों का एक आवर्ती विषय है। मन्नू भंडारी यह

दिखाती हैं कि आर्थिक प्रगति और नगरीय सुविधाओं के बीच भी संबंधों की गर्माहट क्षीण होती जा रही है, और यही आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन का सबसे बड़ा संकट है।

मूल्यों का संक्रमण और नैतिक दुविधा

मन्नू भंडारी की कहानियाँ अपने समय के मूल्यगत संक्रमण को भी प्रामाणिकता से उजागर करती हैं। स्वातंत्र्योत्तर समाज में पुराने मूल्य टूट रहे थे और नये मूल्य अभी पूरी तरह स्थापित नहीं हुए थे। इस संधिकाल में मनुष्य प्रायः नैतिक दुविधा की स्थिति में रहता था — वह न तो पुराने मूल्यों को पूरी तरह त्याग पाता था और न ही नये मूल्यों को सहजता से अपना पाता था।

लेखिका ने इस नैतिक दुविधा को अपने पात्रों के माध्यम से अत्यंत सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है। उनके पात्र सही और गलत के बीच, परंपरा और परिवर्तन के बीच, तथा व्यक्तिगत आकांक्षा और सामाजिक अपेक्षा के बीच निरंतर झूलते रहते हैं। मन्नू भंडारी इस दुविधा को किसी सरल नैतिक निर्णय में नहीं समेटतीं, बल्कि उसे जीवन की जटिल सच्चाई के रूप में स्वीकार करती हैं। यही दृष्टि उनकी कहानियों को यथार्थ के निकट और मानवीय दृष्टि से संवेदनशील बनाती है।

करुणा, संवेदना और मानवीय दृष्टि

मन्नू भंडारी की कहानियों की सबसे बड़ी शक्ति उनकी मानवीय दृष्टि है। वे अपने पात्रों को किसी निर्णायक की दृष्टि से नहीं, बल्कि एक संवेदनशील सहयात्री की दृष्टि से देखती हैं। उनकी कहानियों में पीड़ा है, किंतु निराशा नहीं; यथार्थ की कठोरता है, किंतु संवेदना की कोमलता भी। यही संतुलन उनकी रचनाओं को विशिष्ट बनाता है।

वे साधारण मनुष्य के साधारण दुखों में भी एक गरिमा खोज निकालती हैं और उसे साहित्य के योग्य विषय बनाती हैं। उनकी करुणा भावुकता में नहीं बदलती, बल्कि एक गहन सामाजिक संवेदना के रूप में प्रकट होती है। यह मानवीय दृष्टि उनकी कहानियों को कालातीत बनाती है, क्योंकि मनुष्य की मूल संवेदनाएँ हर युग में समान रहती हैं।

शोध के निष्कर्ष एवं निष्पत्तियाँ

प्रस्तुत अध्ययन से अनेक महत्वपूर्ण निष्पत्तियाँ सामने आती हैं। प्रथम, मन्नू भंडारी की कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर मध्यवर्गीय जीवन का एक प्रामाणिक और जीवंत दस्तावेज़ हैं। द्वितीय, उनका यथार्थ बाहरी घटनाओं का नहीं, बल्कि पात्रों की भीतरी अनुभूतियों का यथार्थ है, जो उनकी रचनाओं को मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करता है।

तृतीय, आर्थिक संघर्ष, महानगरीय एकाकीपन, पारिवारिक विघटन, मूल्यों का संक्रमण और स्त्री की उपेक्षा — ये उनकी कहानियों के प्रमुख सामाजिक यथार्थ हैं। चतुर्थ, उनकी भाषा की सहजता और शिल्प की कुशलता उनके यथार्थ बोध को प्रभावी अभिव्यक्ति प्रदान करती है। पंचम, उनकी कहानियाँ अपने समय का चित्रण करते हुए भी मानव मन के शाश्वत प्रश्नों को स्पर्श करती हैं, और इसी कारण आज भी प्रासंगिक एवं मार्मिक बनी हुई हैं। इस प्रकार हिंदी कहानी में मध्यवर्गीय जीवन और सामाजिक यथार्थ के अध्ययन के लिए मन्नू भंडारी का कथा साहित्य एक अनिवार्य स्रोत है।

कथावस्तु में सूक्ष्म प्रसंगों की भूमिका

मन्नू भंडारी की कहानियों की एक विशेषता यह है कि वे बड़ी घटनाओं की अपेक्षा छोटे छोटे सूक्ष्म प्रसंगों के माध्यम से जीवन के बड़े सत्यों को उद्घाटित करती हैं। एक साधारण संवाद, एक मौन, एक प्रतीक्षा अथवा एक छोटी सी उपेक्षा — ये सब उनकी कहानियों में गहरे अर्थ धारण कर लेते हैं। यही सूक्ष्म दृष्टि उनके यथार्थ बोध को विशिष्ट बनाती है।

रोज़मर्रा के जीवन के ये छोटे प्रसंग ही मध्यवर्गीय जीवन के वास्तविक संघर्ष को प्रकट करते हैं। लेखिका इन प्रसंगों के माध्यम से यह दिखाती हैं कि मनुष्य का जीवन बड़ी घटनाओं से नहीं, बल्कि इन्हीं छोटे छोटे क्षणों से बनता है, और इन्हीं क्षणों में उसकी पीड़ा और जिजीविषा छिपी रहती है। इस सूक्ष्म कथा दृष्टि के कारण उनकी कहानियाँ जीवन के अत्यंत निकट प्रतीत होती हैं।

मन्नू भंडारी का हिंदी कहानी को योगदान

हिंदी कहानी के विकास में मन्नू भंडारी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने नई कहानी आंदोलन को एक संवेदनशील और मानवीय दिशा प्रदान की। उनकी कहानियों ने यह सिद्ध किया कि यथार्थवाद का अर्थ केवल कटुता और निराशा नहीं है, बल्कि जीवन को उसकी समग्रता में, उसकी पीड़ा और उसकी कोमलता दोनों के साथ प्रस्तुत करना है।

उन्होंने स्त्री के अनुभव को, मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष को और साधारण मनुष्य की संवेदना को हिंदी कहानी के केंद्र में स्थापित किया। उनकी सहज भाषा और मार्मिक कथा शैली ने हिंदी कहानी को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाया। उनका योगदान इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने आने वाली पीढ़ी की अनेक रचनाकारों के लिए एक प्रेरक मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार मन्नू भंडारी हिंदी कहानी की परंपरा में एक मील का पत्थर सिद्ध होती हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मन्नू भंडारी की कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन के संघर्ष और सामाजिक यथार्थ का अत्यंत प्रामाणिक चित्रण प्रस्तुत करती हैं। 'यही सच है' में आधुनिक युवती के भावनात्मक द्वंद्व को, 'अकेली' में वृद्धावस्था के एकाकीपन को, 'त्रिशंकु' में पीढ़ियों के अंतराल को, और अन्य कहानियों में आर्थिक संघर्ष तथा पारिवारिक संबंधों की जटिलता को उन्होंने गहराई से उजागर किया है।

मन्नू भंडारी की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने साधारण मध्यवर्गीय जीवन को साहित्य का गरिमामय विषय बनाया और यह सिद्ध किया कि बड़ी कथा के लिए बड़ी घटना की नहीं, बल्कि गहरी संवेदना की आवश्यकता होती है। उनकी कहानियाँ अपने समय का सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत करते हुए भी मानव मन के शाश्वत प्रश्नों को छूती हैं, और यही कारण है कि वे आज भी उतनी ही प्रासंगिक एवं मार्मिक प्रतीत होती हैं। हिंदी कहानी के अध्ययन में मन्नू भंडारी का योगदान अविस्मरणीय और अनुकरणीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

[1] भंडारी, मन्नू — मन्नू भंडारी की संपूर्ण कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

[2] भंडारी, मन्नू — यही सच है तथा अन्य कहानियाँ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

[3] भंडारी, मन्नू — एक प्लेट सैलाब (कहानी संग्रह), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

[4] भंडारी, मन्नू — एक कहानी यह भी (आत्मकथात्मक), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

[5] यादव, राजेंद्र — नई कहानी की भूमिका, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली।

[6] सिंह, नामवर — कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

[7] सिंह, बच्चन — आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

[8] नगेंद्र (संपादक) — हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।

[9] गुप्त, मनोहर — हिंदी कहानी में मध्यवर्गीय चेतना (समीक्षात्मक अध्ययन)।